

०१०७

देवीरूपमह

Script: N. Nagari. material: P/L

ल० प० वि० का० का० यो० म० य० त० न० त० प्र० क० त० न० य० त० का० यो० नि० व० त० न० क०  
 ला० रा० क० ग० त० का० यो० र० सी० अ० या० वि० पु० र० सु० य० यो० नि० त० न० । का० य० ते० क० ल० व० य० न० ।  
 उ० य० न० का० रा० त० का० यो० रा० न० त० न० त० प्र० क० त० न० य० त० का० यो० प्रति० ज्ञा० क०  
 ला० रा० क० ग० त० का० यो० र० सी० अ० या० वि० पु० न० न० य० न० वा० य० का० त० का० यो० रा०  
 र० ति० न० त० प्र० क० त० न० य० त० का० यो० र० सी० अ० या० वि० पु० न० क० ल० रा० क०  
 त० का० यो० र० सी० अ० या० वि० पु० न० अ० ग० न० त० का० यो० पु० त० न० त० प्र० क० त० न० य०  
 त० का० यो० रा० न० त० क० ल० रा० क० ग० त० का० यो० र० सी० अ० या० वि० पु० न० अ० ग० त० त०  
 का० यो० र० सी० अ० या० वि० पु० न० त० प्र० क० त० न० य० त० का० यो० रा० न० त० क० ल० रा०



[illegible]



श्री विष्णु भक्तानाम् श्री गुरुभ्यो नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥  
 श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥  
 श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥  
 श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥  
 श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥  
 श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥



[illegible]



२५  
 मन्त्रसाधनस्तोत्रातः नासः प्रमाणः कर्तव्योऽनुष्ठानमिदं ततः ततो निम्नं ३० विधानं सारं च  
 व प्रयोगो योक्तुं मन्त्रालम्भमादिमं त्वांस्तु कृत्वा १००० हिता बुधः सदा वागुत्तु वाको नराणां प्रथम  
 आन्तिलीलया। परवा ३ धरमांका योनिं को ह्याम् ०० लब्ध येः सुत्वा तु २०५ वा धी स पर ते  
 स्यावसांशुत्तम कठिनाया चेत न्मथो मन्त्रलाया च पु कथो त्वासा मन्त्रा निस्य तैः ३ कोः यु दे  
 १। पैः स्यापि स कैः १४ वन्ति त्वा च न कृत्वा विधिं ३००० सो न पि स्या सो च स्या २००० क  
 लस्यो ततः ३३३३ वा अन्ते नैव विधानेना पु कां कृत्वा स्वराक्षितः १५ सिमा च प्र यो न  
 नात्वा १००० मन्त्रा प योत्ता तथा ती स मा का नो नि स धा ता कि स मा न्नि तः १००० वा क्रोतय  
 व्यथे द्वे व त्तत्वा त्तत्वा सा मा र वे त्वा १००० वन्ति वै दे वाः स व स त्तत्वा स मा र वे त्तत्वा १०००  
 तत्त्वा नि से या सा मा न ० तो ज वृत्वा सु खी त वे त्वा इ रा नी ० रा क्षि त्वा सा मा र वे त्तत्वा १०००  
 ते १ सा धा त्त विधि नि क्षिप्ता मा का बी क ० व ० न्ना मा का लम्भमा १३ स्या स्या च तु ध्या ० त  
 स्या मा ३३ १० कृत्वा तत्त्वा मा का दे वाः १००० स्या च ० तिलीलया १००० स्या च ० तिलीलया १०००  
 तत्त्वा कृत्वा पु कथो त्वा विधा न त १००० तत्त्वा धरमांका ३००० स्या त ० ते न त







२७  
 २८  
 २९  
 ३०  
 ३१  
 ३२  
 ३३  
 ३४  
 ३५  
 ३६  
 ३७  
 ३८  
 ३९  
 ४०  
 ४१  
 ४२  
 ४३  
 ४४  
 ४५  
 ४६  
 ४७  
 ४८  
 ४९  
 ५०  
 ५१  
 ५२  
 ५३  
 ५४  
 ५५  
 ५६  
 ५७  
 ५८  
 ५९  
 ६०  
 ६१  
 ६२  
 ६३  
 ६४  
 ६५  
 ६६  
 ६७  
 ६८  
 ६९  
 ७०  
 ७१  
 ७२  
 ७३  
 ७४  
 ७५  
 ७६  
 ७७  
 ७८  
 ७९  
 ८०  
 ८१  
 ८२  
 ८३  
 ८४  
 ८५  
 ८६  
 ८७  
 ८८  
 ८९  
 ९०  
 ९१  
 ९२  
 ९३  
 ९४  
 ९५  
 ९६  
 ९७  
 ९८  
 ९९  
 १००



३ अथ नाकुप तोको मादि साधसि धा ति सगुर हय ॥ ५० ॥ इती सीमा कींठे अत्र सा  
 गो मुल मंते उदय ॥ ना मे को न विमरगे ध्या यमा ॥ ५१ ॥ जिह्वा पदमा कुरु व  
 मा धि वंठिका वंठम तमा ॥ सा स्त्रित स्थिति परो वधमा दिन वस्थ पितृ स्मा तस्ति  
 ल तै लेन पु वरि क्त न वन पो तमा ॥ ५२ ॥ यवा वन कत्वा विक्रां स्वेव तु पु कथे त्तु त्व स  
 का वये वै दिग्ग ॥ त था न्धा पि ता न्पा र्था पये त्तु न कुरु सां प ॥ ५३ ॥ व न  
 सा मा द्वित न ॥ क व स्वे व वा ना त लि स धां त मा न्नु मा प कं क मा ग न  
 स पु वै क्त सु नी मे व जा य ता ले स यो व वा मु सि न्ध वं न व रि ता रि त ग य ज  
 सां र्था प सो यो दी ॥ ५४ ॥ ठिकां ये मा तु वि ता ग ॥ ५५ ॥ सा मा यो र्सा स्मा ता मा वि  
 ता ॥ ५६ ॥ व ध ध ध व न कै ॥ त धा र क्त न व स्ते ता व स ॥ ५७ ॥ नां त्र क्त व स ॥ ५८ ॥



[illegible]







۱۰







[illegible]



[illegible]



वै वसंकाशां चक्ष्माणां कान्तु वलौः । बुद्धये तदा तो द्वौ स्व रक्षितानि विरो वितः । एकैकं वृत्तं  
 ततो त्वं कपे वै तस्मिन् तो नरः । प्रतिस्ते के न सो त वा पायरा विमथु प्रितं स्या तिलं सव को मम  
 नां प्रो व र विधिः पत्रं भाय सा सो भासां प तये देवी बुद्ध्या इयं न वैः । मूलमां वे पा सो त व  
 सव वरुण पृथं न पा । वृद्धा व विवितु वप न्य व छ्वा ता स म न वा थि काः । स कानं उ क ये नि न  
 कु भा री श्वा क लो स्य वै । रा क वरुण दि का शो ज्ञ सां ग्या मो ज्ञ त वै व र । सो त व का पां री  
 स स च सिधि । प्र ५० त वै ता । इ ५० स स प ५० प ३ मां वै का व र प ५० पा थ क ५०  
 व द्नी य ५० प्र य नै न । न दे य ५० य र प क र प चित् । क्रा त वा य ५० दे रो न म् सो व री  
 छ रा य क ५० स व दं । उ क ये र्दे वी । उ र्दे वी क र प ५० स व र यो त् । उ र्दे वी क र प ५० स व र यो त् ।  
 स ५० न्न य ५० न पा स व सिधि स व । प्रो ति ना त का य वि वा रा ग । ५० ५० ५० ५०  
 इति मा क ५० य ५० य ५० क ५० री उ क वि ध न न्ना मो क वि ५० य ५० य ५० ५० ५०



यमीमताधिपतयेनमःस्तुतमस्तु। अकुरुतवाच। तस्मात्तस्मिन्मस्तुताया अकुरुतवाच।  
 पृथुति। तिरमस्तुतमस्तु। अकुरुतवाच। तस्मात्तस्मिन्मस्तुताया अकुरुतवाच।  
 वमस्तुतमस्तु। अकुरुतवाच। तस्मात्तस्मिन्मस्तुताया अकुरुतवाच।  
 तिरमस्तुतमस्तु। अकुरुतवाच। तस्मात्तस्मिन्मस्तुताया अकुरुतवाच।  
 कामेनस्तुतमस्तु। अकुरुतवाच। तस्मात्तस्मिन्मस्तुताया अकुरुतवाच।  
 तायावातेनस्तुतमस्तु। अकुरुतवाच। तस्मात्तस्मिन्मस्तुताया अकुरुतवाच।  
 वंस्तुतमस्तु। अकुरुतवाच। तस्मात्तस्मिन्मस्तुताया अकुरुतवाच।











श्रीगुरुभक्तकृपे विनियोगः ॥ ३० ॥ श्रीगुरुभक्तकृपे विनियोगः ॥ ३० ॥  
 श्रीगुरुभक्तकृपे विनियोगः ॥ ३० ॥ श्रीगुरुभक्तकृपे विनियोगः ॥ ३० ॥  
 श्रीगुरुभक्तकृपे विनियोगः ॥ ३० ॥ श्रीगुरुभक्तकृपे विनियोगः ॥ ३० ॥  
 श्रीगुरुभक्तकृपे विनियोगः ॥ ३० ॥ श्रीगुरुभक्तकृपे विनियोगः ॥ ३० ॥  
 श्रीगुरुभक्तकृपे विनियोगः ॥ ३० ॥ श्रीगुरुभक्तकृपे विनियोगः ॥ ३० ॥  
 श्रीगुरुभक्तकृपे विनियोगः ॥ ३० ॥ श्रीगुरुभक्तकृपे विनियोगः ॥ ३० ॥  
 श्रीगुरुभक्तकृपे विनियोगः ॥ ३० ॥ श्रीगुरुभक्तकृपे विनियोगः ॥ ३० ॥



[illegible]



[illegible]



[illegible]



[illegible]



[illegible]



कमलाका ना कभानुपामये खनी। कठमविद्याके०१ परकुमारनरायेविता॥८॥ का  
रनी॥ कउ०१॥ कविद्याप्रदायिनी॥ कायचित्रा निलया॥ कांत आनथाविनी॥ ३॥  
खनीरीरादिता दीखनपागावल्लता। दीशा नीदीखनाना था दीक्षिता अक्षसिद्धि  
या लक्ष्मीप्रता वतीप्रकालकोटि रुचिआ लक्ष्मीप्रतालोके रीपभा  
जातमानोदनी। श्रींकारीविप्रायेवी श्रींकारमणिप्रजिता। श्रींकारवेदके  
वनी श्रींकारत वनेखनी। दंसाविद्यादंसापुपादंसावादनप्रपिणी। द  
किनीदंसाभंतादंसाविद्युदो०३ दं०३॥ साकलागमसंतुष्टा सविद्या नं०३३  
विनी। सवेखनीसवेभाता सवेलोके मयेखनी। काओरीकुशिता साधन  
३०३॥ कुरु मविद्या। कामेखनकलादिद्या कामेखनप्रदायिनी। ३०३॥



कमला काना काम नु पा मये खरी। कुरु कवि ध्या के० १ पर कुरु माग न सो विता १ का  
करी १ कुरु १ कवि ध्या प्र सा यिनी १ का म चित्रा निलया १ कांत था न था निगाली १  
खरी री रा रा यिता डी खर प्रा गा वल ता १ डी रा नी डी खर ना था डी रा हा अ स सि धि  
या ल ली प्र ता वती प्र का ल रु को हिरु न प्रिया ल का म गु त लो के री प डी  
ना त म नो यनी १ डी० कारी वि प्र सा रे वी डी० कार म मि नु जि ता १ डी० कार वे ड ड  
न नी डी० कार नु वने खरी १ द० म वि ध्या द० म नु पा द० म वा द न नु पि मी १ द  
कि नी द० म म० त १ द० म वि नु यो १ द० म ता १ स क ला न म म० त १ स स वि या न० द न  
पि मी १ स वे खरी स वे म ता स व लो के म ये खरी १ का मो री कृ शि ता १ स था न  
१ व क रु म प्रिया १ का मे खर क ला दि ध्या का मे ख य प्र सा यि नी १ द र्ज प्र दा द



वनवृक्षानि च तान् स्थितिरेव च । आग्रेण तान् का ज्ञायावत्तमाया न नालो के  
 उरावकीवा ना० तव माया विमोदिताः । आत्मा कान विमो जे द्वाः भू कथाः वा ह्योन  
 नाः का उपाय द्वय ले रगे स्ति प्राप्ता तो व न स्या० रायाः । विदितानि माया लो के माया निवि  
 विद्या निवृत्त व द्वा मा विरो जै स्व तकाः रा० ति मा वा सु यः । आ सो ह न रा त०  
 विद्या० र द र था ति र द र था क० । रा रा रा रा न त न० । दे वि त का ना० मो रु द्रे तु क०  
 न वि रा न० । तै रा रा रा आ नु स्मृ त्वा० । रु द्रे ते । दे व ता ति १ रा दे वि भु ला तौ  
 स्व जठ० ग क० । ना ना न न कि री ट कुं ड ल थ ना० । वि ता० व रा ल० क ता० । बा ला क० थ त म  
 घ ता० वि ता० थ ना० । बा ले० उ ना नु जि ता । क० ठे न न वि रि त रु व ना मा या १ वे रु पा रा०  
 क रा० । व० दे य० ति १ रा० । रा त न मा यी० । व० स्मा रि रा० । से वि ता० । क ल्पा ना० ।



[illegible]



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वातु मां नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वातु मां नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 के को तो लु सर्व विधि वै वातु मां नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वातु मां नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 सर्व को थाः सा वातु मां नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वातु मां नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 वतः त्रि को मां नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वातु मां नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 वातु लि को मां नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वातु मां नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 वातु लि को मां नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वातु मां नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 वातु लि को मां नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वातु मां नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 वातु लि को मां नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वातु मां नमो भगवते वासुदेवाय ॥



ग० त्र अकारो मूलदे राकणल कारो का तृतीयातु द्वी कारो कातुथ मकारो का  
 मकारो रापातु कठरा विष दे राकणरा कारः पातु व्य० रा० ओकारो पातु पृ० व०  
 लकारो वा० ण० ते त० व० श० द्वी कारः पातु मूलरूपरा किली के० रा० पातु  
 मूलविधाया दोवतु वि० रा० ओ० रा० पातु वि० रे० रा० व० रा० द० रा० वि० रा०  
 इतीपातु व० व० त्व० रा० दे० रा० वि० रा० दा० सि० ती० पातु वि० रा० सी० रा० व० रा०  
 वि० रा० मालिती० पातु वि० रा० सि० धि० रा० व० रा० वि० रा० जो० रा० क० रा० पातु वि० रा० तै०  
 वी० म० लि० रा० ध० रा० पातु व० रा० रा० पातु रा० व० रा० त० व० रा० उ० रा० रा० पातु  
 का म० क० रा० उ० वि० का० रा० पातु म० रा० उ० रा० व०



श्री पावतु दुवावात पवनदेवदेवराजो कान्तु मुरुकावत  
 याउं कंभोमायादेव कवचं सुंदरी विद्योः तन्मो कवचं देरायारिसो कोरिमां वति।  
 श्रीमायादेवराजो देवि वदन्मागि कवचं मां ह विन्मयन सार्वदिसाथ कं देवि सार्वदिसा  
 पतिपुत्रकनचि स्थापितामा मुद्रिचं यो नुसुतव कीर्तितन सुंदरी देवरा  
 प्रोक्तानि यो गः कायवकागो बीकस्थपदमां कुटं वितीयां राक्षसुवाते।  
 तृतीयां कीलकं प्रोक्तं सिवे न पतितानि तन रुकायः पातु मोरी जे कावः  
 पातु पालकं श्री कावः पातु मोवचं न कावः पातु के लकं डी कावः पातु दय  
 वासि वं सुंदरी यावतु। य कावः पातु के लकं रं कावो जाति देरा कं कवचं पातु लि



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 सावित्री नमः ॥ २ ॥  
 ते यस्तौ केशव नमः ॥ ३ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
 दशैव वासवतां ॥ ५ ॥  
 दशैव वासवतां ॥ ६ ॥  
 दशैव वासवतां ॥ ७ ॥  
 दशैव वासवतां ॥ ८ ॥  
 दशैव वासवतां ॥ ९ ॥  
 दशैव वासवतां ॥ १० ॥



[illegible]



मी (पि) तो व न हा रत्न वात विराजमाना नीला नो नाना रंगाना नीला प्रसादा परमप्राप्त  
 अता सिव तु वाता नी दे व वा वा विष्णु ता म न्न सो नी प्रो व सो न न ति उ ल्गा ॥ १ ॥  
 म त वा न्न सो न न ति रत्न वस्तु निव र्णा म ता मी सि व तु वा न्न न क ला वा न तो दे वी मा ति  
 मी सु क मा व न्ना सि धि ले दे व दे वी सु क र स्य पर ल त वा र सी दे व वा र ॥ ४ ॥  
 मा स्ति ति यो क्ता र ति यो दे व ॥ १ ॥ ना त ना म्ना त थि म्ना १ ४ पर मा मी क र म्ना म्ना  
 स्थिता त व त्ता म्ना ए ता न्न सु व ता दे वा न्न प्रो वा व व व न्ना म्ना ॥ १ ॥ सो तो ष थ न्ति त म्ना  
 उः क ला न्न न्ना द क्ता न क्ता र सी दे व वा वा रा वा व न्ना म्ना १ ॥ प्री ति स्य क्ताः व्ना वि न्ना म्ना  
 स व न्ना म्ना दे वी सु क्ता म्ना १ ॥ यो थ त वि न्ना ति व र्णा म्ना १ ॥ दे वी सु क्ता वि न्ना दे वी यो व स्य म्ना त  
 न रा म्ना सो न्ना ति ते ना म्ना म्ना वि न्ना म्ना म्ना त न दे व दे वी सु क्ता वि न्ना म्ना १ ॥ ३ ॥  
 नो १ न्ना म्ना १ ॥ सो त व यो गा न न न तु गी सो व म्ना म्ना १ ॥



[illegible]



[illegible]



[illegible]



[illegible]



[illegible]



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥



सा यका नां मां कात्मा नां परादि विवादा सावरात म्मा को र व क ल य म्मा सु ३  
 कि ते। यत्तु व त स क्क म्मा सा का लो प ३० त पा री वे वि धि व ३० द्वा स्तु प व म्मा ल  
 ३० या क्क वि ना म्मा क्क प ले धा र्त्तु स्तो त ३० म्मा ली त द्वा म्मा ल म्मा म्मा सा वि  
 के यो न र का वा सा त त ३० म्मा द का प रा थे न व द्वा म्मा नां ग ति ३०  
 के त्ता र नि र वा र। ए व म्मा का द रो डे वी तु ल्ली मा र्त्ती न्पो त म्मा। का द्वा ३०  
 लि ३० म्मा था य। ३० वि ३० वा र वि र व क्तु ३० य ३० नि र वा र ३० प ३०  
 प रे म्मा ३० म्मा य नि तु ता ३० व ३० व रे म्मा म्मा व र ३० व नि म्मा ३० प रे म्मा नी ३० वा ३० द्वा  
 म्मा नी ता ३० त्वा ३० वि र व यो नि ३० म्मा र ३० म्मा ३० प ३० वि र य ३० म्मा र ३० म्मा ३० वि र वा र ३०  
 ता ३० म्मा र्त्ती ३० य ३० म्मा ३० म्मा ३० म्मा ३० म्मा ३० म्मा ३० म्मा ३० म्मा ३० म्मा ३०



तिसराया ११ लु रिशोसध्यापुतविवाहोतो गमोसासाध्या नतं ते । न तेक शोनि  
 न विरिता न साध्या तापं न न न न तं ते । त एव य तान्न त एव पु क्काः सवतसांसा  
 न य तात वं लिखं पु नान विनिर्मुखा मां शत व पु तं क म तां लया तापय ते प्रा पु वं  
 ति व क ह प्र ता वा स तां स व यो निं रा नां पु न यो वि नि र दाना सु तान्न तया वेद व र ग्या  
 स व यो न स व पु यो । पु सांसा स वे दे वे नि मा सा पु व स न स व ती । सा वि त्त ता मा या दे वो व  
 आ तो बै क का नि गी । उ वा न व न न वि वां न य ता न ए व सा थ क्का सी डे व वा रा सु तान्  
 न यान्न ते व क्का न त सां तो ज स मा वि ता । पी ता स्या वि य तां दे व व न स तां व क्का न व न व रू यो  
 रा सां त थ मा मा तो डे वि र त्त व न स व द्या । ए व ए व व न स सा क्का सु तान् वि य तां सा सा  
 स व रू के सा वि दे वे नि वि वां ते को वि थो य ता न यो व व न यो सा वि य तां सा सा







नी मे न भा तिः क पि नी क थ हैः यु म्ये स्व मि से न मि भ द न क भा व के न ने के न व थ ग म के  
 न द न भा म छे के न त छे व रो वे भ क ना ग कु हैः प न शो ह म्ये ग न नि द न ति न प नि व र सा थ का  
 न न द है न वे र स न आ र स न वि पा त प न न व त छे व वा व न स री के रा व न ग र नि न र स न न ग म  
 सै न मी तिः प ति हो पि रा न न प को ग दो मी स क ला धि सि धिः यु कि यु दो वी म पि मि धि म् कु  
 क्क त स न द व र यो ता न मी नि व र सः यु पा य सै न पि स र व र स धिः न व न व ते म दि म  
 न व द म स स र स ती वा धि त नो क म थोः कान ति कि नु नु ते नु मि तो ये क न य न व न म  
 नी रा म र म ग त छे व वा स व व थ न व म मी कि प्र म रा क म दि त छे व न्नी वा म प र म म के वा न्दि  
 म द र म म धा न ग प म म म र म क व पि स थ ता थ न स न उ वि न म स व स कि थ न म  
 ग दी म द त द स क म म द सि म म म म द त द स कि प ता वा स न न यु क्त प त व र कि वे र म  
 क म म म म न स व व मि स सि के द स व म व वे व न उ य व न त छे व थो व वे वि नु यो











[illegible]



[illegible]



[illegible]



[illegible]



वल्लथातिरुताः। ए कः स्या ए वरुननिरिचिपव धिमास्ते आः पा १ यो सवमाके तत्राति कुनोति।  
 लवथास्यवति पुत्रस्य ०३ नितिवकी नं का पुता क ०५ नितका पतिथ ३० रुच स ०५ क ०५ प ०५ व ०५  
 तमास्वयित क्रिता काः स ०५ य ०५ तित ३ ताति व नतये वि १५ ५० का प ०५ व ०५ त वनाम  
 गता ०५ तिवे १५ ५० त स्थिको ता निल यो वि पु रे वि ता ले १ त ५० स ०५ ता य ०५ त  
 तप ०५ तित ०५ व का य ०५ वि का ०५ तित ०५ न व ने स ०५ लो क पा ले १ ५० ५० त ०५ पु न  
 मधि मल ०५ वि पु न म ०५ नः कु नः रु च ०५ न त वि ति ०५ म र न स ०५ वे ग ०५ न ०५ र ०५  
 स ०५ न ०५ य ०५ य ०५ वि ०५ ता वि ०५ त ०५ व ०५ ध ०५ १ ०५ रु ०५ स ०५ र ०५ व ०५ य ०५ ता ०५ पु ०५ त ०५ र ०५ ति ०५ ल ०५ स ०५ १ ०५ स ०५ व ०५ रु  
 त ०५ स ०५ र ०५ सि ०५ वा ०५ क ०५ प ०५ दु ०५ ता ०५ १ ०५ रु ०५ ते १ ०५ वि ०५ त ०५ व ०५ १ ०५ स ०५ र ०५ स ०५ उ ०५ य ०५ ०५ व ०५ ता ०५ म ०५ १ ०५ वि ०५



स्तवरा  
क।

श्रींकात्रींशिवतत्वमाथानिलयांविधातुतत्वाति-  
 मानुतिंस्यंस्मोथगतत्ववयांऊह्वाकापिदया-  
 मानुवींस्तुलाडांकुववलातांविधातुतामु-  
 लीमातसीपुका-  
 रितातिलस्त्रींस्व-  
 ऊमुलेनाकारिकिंमडासितकिंमतांऊना-  
 त्ववैंनेनसालिलस्थगितेतनेले।सांनिथा-  
 कलयास्तुथालुतस्या-  
 लिंकांकींकासोकलवापय-  
 निर्यासोपमानुतिंसंनवापुतंसं-  
 इतिदेवामांताव-  
 कल्याणावृष्टिनिरिमात-  
 योवराभांगल-  
 एतावेवैवकेननि-  
 त्तस्यावविशुद्ध-  
 कतिवानसतिबुद्धा-  
 तियु-



निम्नतः ॥ श्रीकाव्ये ॥ १०१ ॥ सतीत्याय पत्रावरं तु सलिलं ॥ २० ॥ रत्ना गंधे ॥ २० ॥  
 १ ॥ येन नववस्त्रे पत्रावरं मृदुली पुष्पस्तोका ॥ सल्लापाग विदोतुका मृदुल नयः ॥ स प्रमोदः ॥  
 ३ ॥ पत्रं सल्ल पुष्पं ॥ २० ॥ मृदुली पुष्पस्तोका ॥ सल्लापाग विदोतुका मृदुल नयः ॥ स प्रमोदः ॥  
 ति निःशङ्कीर्णं ॥ १ ॥ पत्रं सल्ल पुष्पं ॥ २० ॥ मृदुली पुष्पस्तोका ॥ सल्लापाग विदोतुका मृदुल नयः ॥ स प्रमोदः ॥  
 वागलक्ष्मणा ॥ १ ॥ पत्रं सल्ल पुष्पं ॥ २० ॥ मृदुली पुष्पस्तोका ॥ सल्लापाग विदोतुका मृदुल नयः ॥ स प्रमोदः ॥  
 मावरं नीलावनं निमलं ॥ १०१ ॥ सल्लापाग विदोतुका मृदुल नयः ॥ स प्रमोदः ॥  
 ३ ॥ अंशुवामावरं पत्रं सल्ल पुष्पं ॥ २० ॥ मृदुली पुष्पस्तोका ॥ सल्लापाग विदोतुका मृदुल नयः ॥ स प्रमोदः ॥  
 २० ॥ पुष्पं गंधं ॥ २० ॥ मृदुली पुष्पस्तोका ॥ सल्लापाग विदोतुका मृदुल नयः ॥ स प्रमोदः ॥



आ सो तपल कातिके कुमाप के न पौ स्व स्या के त की कां श्री भविक काला वरु कु सु हो न तार व्यामी  
 स्व सी ॥ १ ॥ का का वर व पु सि ध क ल ना दं का र दं ता ति कां थु पं ते प वि क ल य या मि स त त वं ॥ २ ॥  
 उ दं धो सि दे। ५० बी आ द क ल ता ति कां त वि त वां त ला म र का ति कां द य वि द्य कित दे म य म र व  
 बी कां के म सु सी धी पं म ~~५० बी आ द क ल ता ति कां त वि त वां त ला म र का ति कां द य वि द्य कित दे म य म र व~~  
 सां कित व द्धि ता न सां कित पा देः सु था पु वि ते न ले या मो द मा नी वि की र क पु रि उ कोः  
 स्तु त शोः सा प ल मी सं कित पा उ कां त वि त वां स ह म य मी स्व सी ॥ १ ॥ ००। ३० का री व र वि  
 त व की त तिल यो दी का र मं ता ति कां थु ॥ ३० का री व र वि  
 न व कु न् ॥ ३० री क ल मित का म अ नु नि अ त मी रा म्मा म्मा द्वा रा वै दी का री नि दे द या



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रींकारो जलवर्गा कल्पितकलालंकारश्चिंत्याशने श्रींकारांतस्य  
 वित्तं स्वतीवयमुता मंशाकलैरावृतं श्रींकारादिसामस्तसिद्धकलनासंश्रुतामातां  
 श्रुत्वा श्रींकारी मतिवैवभासि सततं श्रींकारावपि योऽपि पदं यानुत्तुतं प्रकाशं तमे  
 निर्मितां कोमां वरं तस्मिन् दूयसासिद्धिं विना तममालं तावरे नो ज्ञेयं दायालं वृत्तं  
 तस्मात् वरस्य न तस्मात् तं यमां स्थितां दय्यतीतमा मातं वितवा मासाथा  
 समर्थं आमां तिकां ॥ सौवर्गं स्वल्पं त्रिकुंठलं मंसां तां मासां मणिं सां  
 स्वां नानं कनकं सिद्धमां तिसंसां किरीटं तं सवालं वृत्तं बाहुं ठवलं ये वै यथा  
 लिं तं नादलिं सल्लापां वित्तां नुपुनयं मंसां सां मितां तं विटं पदं सतीं न सां रक्तं  
 पतेत् कुमारको मंथोत्तं स्वं नं कर्तुं च वितां न कातममालं तस्मात् समर्थं कृतां क  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥







तत्रिदिदेयथमार्थिकारतः को गृहस्वतन्त्रसुखसुखावस्था सु अयोसौत ७ अथावा  
 ५ कृतद्वोषो अमर्षमात्रा मातृसावासा कर्मणा यस्यात्मा ७ अथावा ३ वे मात्रि स्या  
 अस्या तं ७ उक्तं यत्कृतं यदा विरितं तदा दे० प्रातः का हो माया कृतसीमा या विरितं  
 अस्यासी सा कृता के स्वरीबुद्धाविधासीमा या विरितं ७ अथावा ३ वे मात्रि स्या विरितं  
 न० ५ तै च वरुणिः ७ अथावा ३ वे मात्रि स्या विरितं ७ अथावा ३ वे मात्रि स्या विरितं  
 देवताः ऐ० क० ए० दी ७ अथावा ३ वे मात्रि स्या विरितं ७ अथावा ३ वे मात्रि स्या विरितं  
 कीलकं ७ अथावा ३ वे मात्रि स्या विरितं ७ अथावा ३ वे मात्रि स्या विरितं ७ अथावा ३ वे मात्रि स्या विरितं  
 आर्धकं पेवि नियोगः ७ ऐ० दी० रसी० ऐ० क० रसी० मावका यौ रसीमा या विरितं ७ अथावा ३ वे मात्रि स्या विरितं  
 यौ क० मा० ७ जी ॥ ५ ॥ ऐ० दी० रसी० क्री० द० क० क० द० रसी० विरितं तदा यौ रसीमा या विरितं



[illegible]





CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri



[illegible]

७३  
मं०

सी गणेशाय नमः ॥ ७३ ॥ तमे ० नमः सी कृष्णाय नमः ॥ ७३ ॥ रसगान विष्णुयाम ० नमः नमः बाया  
 भुङ्क्ते सो द्याय ७३ ० यथा विद्या न तः ॥ ७३ ॥ विष्णु यम नाः स्वरस्य ॥ ७३ ॥ वेस्य ७३ ॥ वाउ  
 कान आरुण सी ७३ ॥ वाक्य मायामात्रस्य ॥ ७३ ॥ विष्णु मायती ७३ ॥  
 सी ७३ ॥ वेता ॥ ७३ ॥ बीज ॥ ७३ ॥ राकि ॥ ७३ ॥ यन्कील ७३ ॥ मायसी ७३ ॥ परिपुता  
 ७३ ॥ वाक्य ७३ ॥ ७३ ॥ विष्णु ७३ ॥ विनिशो ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥  
 ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥  
 ता मि ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥ ७३ ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]



पुनः च न न स्मरन्ती गतालिपत येन यः ॥ ३ ॥







